शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सामाजिक शोध पद्धति के रूप में वैयक्तिक अध्ययन का प्रयोग (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)

दीपमाला यादव (शोधार्थी)
डॉ. लक्ष्मण शिंदे (रीडर)
शिक्षा अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भूतकाल में मनुष्य अपने सामाजिक जीवन में अज्ञानता, पूर्वाग्रह, त्रुटिपूर्ण निरूपण तथा व्यावहारिक अवलोकन के आधार पर ज्ञान का संग्रह कर लेता था, किन्तु आज के सामाजिक संसार में सत्य की वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग कर खोज की जाती है। अर्थात् समाज में शोध की भूमिका महत्वपूर्ण हो गयी है। सामाजिक घटनाओं को समझने के लिये शोध की विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग वर्तमान समय में अत्यधिक प्रचलन में है, उन्हीं में से शोध की एक पद्धति वैयक्तिक अध्ययन सामाजिक शोध पद्धति के रूप में उभर कर आयी है। समाज की किसी भी अद्‌वितीय ईकाई - एक व्यक्ति, एक परिवार, एक समूह, एक समुदाय, एक विद्‌यालय, एक कक्षा का गहनता के साथ अध्ययन करना ताकि प्राप्त परिणामों को विस्तृत समूह हेतु सामान्यीकरण किया जा सके। प्रस्तुत शोध में शिक्षा तथा समाज के क्षेत्र में होने वाले वैयक्तिक अध्ययन के प्रयोग का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। जिससे शैक्षिक और सामाजिक क्षेत्र में वैयक्तिक अध्ययन पद्धति के महत्व को समझा जा सके।

प्रस्तावना

मनुष्य को एक सार्वभौमिक सामाजिक वातावरण में स्वयं की प्रगति करने, भौतिक, भावात्मक तथा नैतिक पहलुओं का विकास करने के लिये शिक्षा आवश्यक साधन है। शिक्षा से मानव उन्नति की ओर अग्रसर होता है। आवश्यकता है तो इस साधन में लगातार ऐतिहासिक अध्ययन और उसके परिमार्जन करने की। शिक्षा के क्षेत्र में गहन जानकारियाँ प्राप्त करने, तथ्यात्मक व वैज्ञानिक अध्ययन करने, पुष्टि योग्य प्रमाणों को ज्ञात करने तथा नयी-नयी तकनीकियों व विधियों का पता लगाने हेतु अनुसंधान की आवश्यकता होती है। शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान ज्ञान को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से किसी घटना का गहन और सावधानीपूर्वक किया गया अन्वेषण है।

थियोडोरसन (1969) के अनुसार यह सामान्य सिद्धांत निकालने के उद्देश्य से समस्या के अध्ययन का व्यवस्थित और वस्तुपरक प्रयास है। रोबर्ट बर्न्स (2000) ने इसे किसी समस्या के समाधान खोजने में किया गया व्यवस्थित अन्वेषण कहा है।

सामाजिक अनुसंधान

शिक्षा क्षेत्र के समान ही समाज से संबंधित, सामाजिक जाँच करने के लिये, सामाजिक समूहों या सामाजिक अंत:क्रियाओं की प्रक्रियाओं का अध्ययन करने तथा सामाजिक घटना का

विश्लेषण करने संबंधी अनुसंधान सामाजिक शोध के अन्तर्गत आते हैं।

रायसी ए. सिंगलटन और बूस सी. स्ट्रेट्स (Approaches to Social Research, 1999:1) ने कहा है कि सामाजिक अनुसंधान में सामाजिक जगत से संबंधित विषयों के प्रश्नों के निरूपण एवं उनके उत्तर ढूँढने की प्रक्रिया निहित है।

सामाजिक शोध वह वैज्ञानिक उपकरण है जिसके द्वारा सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण व अध्ययन किया जाता है।

Whitney के अनुसार, Sociological Research includes a study of relationship of human group. समाजशास्त्रीय शोध में मानव समूह के संबंधों का अध्ययन होता है।

P.V. Yong के अनुसार, Social Research is a disciplined Investigation and Analysis of Interrelated Process of Social Reality सामाजिक अनुसंधान सत्य की परस्पर संबंधित प्रक्रियाओं की सुनिष्चित खोज तथा विष्लेषण है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि सामाजिक अनुसंधान, सामाजिक जीवन का वैज्ञानिक अनुसंधान है।

सामान्य तौर पर सामाजिक अनुसंधान के प्रमुख उद्देश्य हैं :

(अ) समाज की कार्य प्रणाली समझना।

(ब) व्यक्तिगत व्यवहार और सामाजिक क्रिया को समझना।

(स) सामाजिक समस्याओं का मूल्यांकन करना, समाज पर उनका प्रभाव देखना और संभावित समाधानों का पता लगाना।

(द) सामाजिक यथार्थ की खोज और सामाजिक जीवन की व्याख्या करना।

(इ) सिद्धान्तों को विकसित करना।

सामाजिक शोध की पद्धतियाँ :

सामान्यतः शोधकर्ताओं द्वारा समाज की घटनाओं, संबंधों, तथ्यों का अध्ययन करने हेतु शोध की कई पद्धतियां अपनायी जाती है, जिनमें मुख्य रुप से, क्षेत्र अध्ययन पद्धति, प्रयोगात्मक पद्धति, क्रियात्मक अनुसंधान पद्धति, दर्शनशास्त्रीय पद्धति, सर्वेक्षण पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति, सांख्यिकी पद्धति एवं वैयक्तिक पद्धति प्रमुख हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा मुख्य रूप से सामाजिक अनुसंधान की वैयक्तिक अध्ययन पद्धति को केन्द्र में रखा गया है।

वैयक्तिक अध्ययन

समाज की किसी एक अद्वितीय इकाई - एक व्यक्ति, एक परिवार, एक समूह, एक समुदाय, एक विद्यालय, एक संस्था की विशेष परिस्थितियों के कारण गहन अध्ययन की आवश्यकता महसूस होती है, तब वैयक्तिक अध्ययन प्रविधि का प्रयोग किया जाता है, ताकि इससे प्राप्त परिणामों को विस्तृत समूह हेतु सामान्यीकरण किया जा सके।

सामाजिक तथा विज्ञान तथा जीवन विज्ञान में वैयक्तिक अध्ययन एक व्यक्ति या समूह अथवा घटना का विवरणात्मक, अन्वेषणात्मक अथवा व्याख्यात्मक विश्लेषण है। वैयक्तिक अध्ययन एक अनुसंधान प्रविधि के रूप में सामाजिक विज्ञान में सामान्य है। यह किसी व्यक्तिगत या सामूहिक इकाई के गहन अध्ययन पर आधारित है। शोधकर्ताओं ने वैयक्तिक अध्ययन को परिभाषित करने का प्रयास किया लेकिन फिर भी वैयक्तिक अध्ययन की परिभाषा को लेकर उनमें सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाया।

ब्रामली (1990) के अनुसार वैयक्तिक अध्ययन घटना तथा संबंधित घटना के एक समुच्चय की

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

व्यवस्थित खोज है जिसका मुख्य उद्देश्य रूचि के तथ्यों की व्याख्या तथा विवरण होता है।

राब्सन (1996) - अनुसंधान करने के लिए एक युक्ति जो प्रमाणों के विभिन्न स्रोतों का प्रयोग कर वास्तविक जीवन के संदर्भ में घटित एक विशिष्ट समसामयिक घटना का अनुभवयुक्त अन्वेषण को शामिल करता है।

थामस वैयक्तिक अध्ययन की परिभाषा इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि वैयक्तिक अध्ययन व्यक्तियों, घटना के निर्णयों, समायवधि, परियोजनाओं नीतियों, संस्थाओं, अन्य प्रणालियों का विश्लेषण है, जो कि एक या अधिक प्रविधि के द्वारा शुद्धता के साथ किया गया अध्ययन है।

वी.पी. यंग - वैयक्तिक अध्ययन पद्धति किसी एक सामाजिक इकाई चाहे वह एक व्यक्ति, एक परिवार, एक संस्था, एक सांस्कृतिक समूह अथवा संपूर्ण समुदाय क्यों न हो, के जीवन की खोज तथा विश्लेषण की पद्धति है।

सिन पाओ यंग - वैयक्तिक अध्ययन पद्धति को किसी व्यक्ति के सूक्ष्म, गहन एवं संपूर्ण अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें अन्वेषणकर्ता अपनी समस्त क्षमताओं व पद्धतियों का प्रयोग करता है या यह किसी व्यक्ति के संबंध में पर्याप्त सूचनाओं का व्यवस्थित संकलन है ताकि यह जाना जा सके कि वह समाज की इकाई के रूप में किस तरह कार्य करता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि "वैयक्तिक अध्ययन पद्धति के अंतर्गत किसी एक सामाजिक इकाई से संबंधित सभी पक्षों का व्यापक, सूक्ष्म तथा गहन अध्ययन किया जाता है।

वैयक्तिक अध्ययन के प्रकार

विभिन्न विशेषज्ञों ने वैयक्तिक अध्ययन को विभिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया है। वैयक्तिक अध्ययन तीन प्रकार के हो सकते हैं -

1. विवरणात्मक/वर्णनात्मक गुणात्मक वैयक्तिक अध्ययन

इस प्रकार का वैयक्तिक अध्ययन, अध्ययन किये जाने वाले तथ्यों का विस्तृत लेखा जोखा प्रस्तुत करता है। सामान्यीकरण करने का कोई इरादा नहीं होता है, बल्कि अध्ययन किये जाने वाले व्यक्ति या कक्षा अथवा विद्यालय का विवरण प्रस्तुत करता होता है। विवरणात्मक वैयक्तिक अध्ययन किसी सिद्धांत अथवा परिकल्पना या परिकल्पना अथवा सिद्धांत के निर्माण द्वारा निर्देशित नहीं होती है।

2. व्याख्यात्मक गुणात्मक वैयक्तिक अध्ययन

इस प्रकार के वैयक्तिक अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा प्राप्त विवरण का गहन अध्ययन, व्याख्या तथा घटना के बारे में सिद्धांत के निर्माण का प्रयास किया जाता है।

3. मूल्यांकनात्मक गुणात्मक वैयक्तिक अध्ययन

इस प्रकार के वैयक्तिक अध्ययन में शोधकर्ता विवरण तथा व्याख्या से दूर अध्ययन की जाने वाली घटना के बारे में निर्णय लेने तथा मूल्यांकन करने का प्रयास करते हैं।

यिन (1993) ने अध्ययन के परिणामों के विश्लेषण स्तर द्वारा वैयक्तिक अध्ययन को तीन भागों में वर्गीकृत किया है -

1. **अन्वेषणात्मक** - इस प्रकार के वैयक्तिक अध्ययन का उद्देश्य प्रश्नों तथा परिकल्पनाओं को परिभाषित करना है।

2. विवरणात्मक - परिस्थिति का उसके संदर्भ में विवरण प्रस्तुत करना विवरणात्मक वैयक्तिक अध्ययन है।

3. व्याख्यात्मक - सिद्धांत की खोज करने हेतु कारण प्रभाव संबंधों की व्याख्या करना व्याख्यात्मक वैयक्तिक अध्ययन है।

इसके अतिरिक्त वैयक्तिक अध्ययन का एक अन्य वर्गीकरण भी है।

आंतरिक - जिसमें कि शोधकर्ता घटना को समझने के लिए स्वयं रूचि रखता है, जबकि उपकरणीय वैयक्तिक अध्ययन - किसी निश्चित उद्देश्य की पूर्ति हेतु किसी विशिष्ट केस की समझ विकसित करने के लिए शोधकर्ता अंतःदृष्टि की अपेक्षा रखता है तथा सामूहिक वैयक्तिक अध्ययन में विभिन्न घटनाओं का एक समूह के रूप में अध्ययन किया जाता है।

राब्सन (1993) ने वैयक्तिक अध्ययन को छः प्रकारों में वर्गीकृत किया है -

1. व्यक्तिगत वैयक्तिक अध्ययन, जिसके अंतर्गत एक व्यक्ति पर केन्द्रित होकर प्रक्रिया तथा कारणों का अन्वेषण किया जाता है।

2. व्यक्तियों के समूह का वैयक्तिक अध्ययन, जिसके अंतर्गत कम संख्या में एक जैसे समान गुणों वाले व्यक्तियों का अध्ययन किया जाता है।

3. समुदाय अध्ययन, जिसके अंतर्गत मुख्यतः विवरणात्मक प्रकार से स्थानीय समुदायों का अध्ययन किया जाता है।

4. संगठन तथा संस्थाओं का अध्ययन, जिसके अंतर्गत किसी एक संस्था में कार्यक्रम का मूल्यांकन किया जाता है।

5. घटनाओं, भूमिका तथा संबंधों का अध्ययन, इस प्रकार के वैयक्तिक अध्ययन में विशिष्ट घटना का अध्ययन किया जाता है।

6. सामाजिक समूह का अध्ययन, जिसके अंतर्गत प्रत्यक्ष संपर्क समूहों व उनके संबंधों का अध्ययन किया जाता है।

वैयक्तिक अध्ययन के सोपान

वैयक्तिक अध्ययन शोध करने के लिए विशिष्ट, क्रमबद्ध सोपानों का अनुसरण किया जाता है, जो कि इस प्रकार है -

1. उद्देश्यों का निर्माण - शोध प्रश्नों का निर्धारण तथा परिभाषित करना।

2. केस का चयन तथा आंकड़ों के एकत्रीकरण व विश्लेषण तकनीकियों का निर्धारण करना।

3. आंकड़ों के एकत्रीकरण की तैयारी - उपकरणों का निर्माण करना।

4. क्षेत्र में आंकड़ों का एकत्रीकरण

5. आंकड़ों का विश्लेषण तथा मूल्यांकन

6. प्रतिवेदन लेखन

भारत के विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा अनुसंधान हेतु वैयक्तिक अध्ययन शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया जिनका कालानुसार उल्लेख इस प्रकार है :.

1. विद्यालय पर वैयक्तिक अध्ययन

वर्ष	शोधकर्ता	शीर्षक
(1968)	एस. आई. ई	जोर्हट उपखण्ड के एकल अध्यापक विद्यालयों का वैयक्तिक अध्ययन
(1983)	कोल	हिमाचल प्रदेश में माध्यमिक व दसवीं स्तर पर अनुसूचित जनजाति के अनुत्तीर्ण छात्रों पर एक वैयक्तिक अध्ययन
(1983)	मोहन्ना	नवचारित संस्थानों का वैयक्तिक अध्ययन

(1984)	काला	गांधी शिक्षा भवन में एक प्रयोग पर एक वैयक्तिक अध्ययन
(1986)	कृष्णाराव	सात आदिवासी क्षेत्रीय विद्यालयों पर वैयक्तिक अध्ययन
(1988)	अशरफ मोहम्मद	नवाचार कक्षागत अभ्यास के विशिष्ट संदर्भ में चयनित दिल्ली के विद्यालयों का एक वैयक्तिक अध्ययन
(1999	सरोजा	ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा विद्यालय को छोड़कर जाने वाली घटना को प्रभावित करने वाले विद्यालय संबंधी कारकों पर वैयक्तिक अध्ययन
(2007)	सोनी, आर.पी.एल.	बैंगलोर शहर में लचीले (सिमगपइसम) विद्यालयों पर एक वैयक्तिक अध्ययन

2 उच्च संस्थाओं व विश्वविद्यालय पर वैयक्तिक अध्ययन

वर्ष	शोधकर्ता	शीर्षक
(1979)	पोर्टिया	एक भारतीय विश्वविद्यालय के शैक्षिक विभाग की संरचना व कार्य पद्धति पर एक वैयक्तिक अध्ययन
(1982)	मादी	सामाजिक सेवाओं पर आम नागरिक के खर्चों की क्षमताः कर्नाटक में सामान्य उच्च शिक्षा के व्यय लाभ विश्लेषण पर एक वैयक्तिक अध्ययन
(1983)	उमादेवी	संगठनात्मक लक्ष्य, संगठनात्मक वातावरण व अध्यापकों का प्रदर्शन के आंकलन को लेकर आंध्रा विश्वविद्यालय पर एक वैयक्तिक अध्ययन
(1984)	गांगुली	विश्वविद्यालयों द्वारा प्रौढ़ शिक्षा बिहार विश्वविद्यालय का एक वैयक्तिक अध्ययन
(1986)	सालुन्के	शैक्षिक सेवाओं के बाज़ारीकरण:महाराष्ट्र के डेपोली के कोंकण कृषि विद्यापीठ का वैयक्तिक अध्ययन
(1990)	जैना	विश्वविद्यालय वित्तपोषण बडौदा की महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय का वैयक्तिक अध्ययन
(1990)	मल्होत्रा व अन्य	इंजीनियरिंग के वाय.एम.सी.ए. संस्थान का वैयक्तिक अध्ययन
(1990)	सेनगुप्ता	अध्यापकों के व्यवसायीकरण : कलकत्ता विश्वविद्यालय के पुरूष व महिला अध्यापकों पर वैयक्तिक अध्ययन
(1992)	जार्ज	शिक्षा के क्षेत्र में उद्यमशीलता : हमारे महाविद्यालय की घटना को लेकर वैयक्तिक अध्ययन

3 परियोजना पर वैयक्तिक अध्ययन

वर्ष	शोधकर्ता	शीर्षक
(1982	एस. आई. ई. आर. टी.	राजस्थान, बगेड़िया फलन (बांसवाड़ा) में प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम का नवीनीकरण परियोजना पर एक वैयक्तिक अध्ययन
(1985)	अहिरवाडेकर व अन्य	मराठवाड़ा में सर्टिफिकेट कोर्सेस व डिप्लोमा स्तर पर वाणिज्य शिक्षा मराठवाड़ा में व्यवसायिक शिक्षा व मानवीय शक्ति योजना में क्षेत्रीय असंतुलन परियोजना हेतु वैयक्तिक अध्ययन
(1985)	अड़वंत	मराठवाड़ा में +2 स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रम प्रारंभ किये जाने का मूल्यांकन मराठवाड़ा में व्यवसायिक शिक्षा व श्रमशक्ति योजना में क्षेत्रीय

		असंतुलन परियोजना हेतु वैयक्तिक अध्ययन
(1985)	बापट	मराठवाड़ा में प्रबंधन शिक्षा, मराठवाड़ा में व्यवसायिक शिक्षा व श्रमशक्ति योजना में क्षेत्रीय असंतुलन परियोजना हेतु वैयक्तिक अध्ययन
(1985)	गोगटे	मराठवाड़ा में अध्यापक शिक्षा के अंतर्गत मराठवाड़ा में श्रमशक्ति योजना व व्यवसायिक शिक्षा में क्षेत्रीय असंतुलन का एक अध्ययन परियोजना पर वैयक्तिक अध्ययन
(1985)	जोगलेकर व अन्य	मराठवाड़ा में खाद्य प्रौद्योगिकी शिक्षा - मराठवाड़ा में श्रमशक्ति योजना व व्यवसायिक शिक्षा में क्षेत्रीय असंतुलन का एक वैयक्तिक अध्ययन
(1985)	बाकड़े व अन्य	मराठवाड़ा में कानूनी शिक्षा के तहत मराठवाड़ा में व्यवसायिक शिक्षा व श्रमशक्ति योजना में क्षेत्रीय असंतुलन परियोजना हेतु वैयक्तिक अध्ययन
(1985)	पिंटो	शिक्षा व औद्योगिक उत्पादकता पुणे मेट्रोपोलिटन क्षेत्र के इंजीनियरिंग उद्योग में कार्यरत कामगारों व निरीक्षणकर्ताओं का एक वैयक्तिक अध्ययन

4 जिला संभाग अथवा विभिन्न कार्यक्रमों का वैयक्तिक अध्ययन

वर्ष	शोधकर्ता	शीर्षक
(1977)	यादव, एवं अन्य	भारत के ग्रामीण क्षेत्र में शैक्षिक विकास के लिये संसाधनों के उपयोग के एकीकृत उपागम पर वैयक्तिक अध्ययन
(1986)	टी. टी. टी. आई	पोलिटेक्निक में उत्कृष्टता तथा अधिकत्तम प्रभाविता-टी. टी. टी. आई मद्रास का एक वैयक्तिक अध्ययन
(1988)	गुप्ता	पत्राचार शिक्षा का वित्त व उसके षैक्षिक निहितार्थ का विश्लेषण : राजस्थान का एक वैयक्तिक अध्ययन
(1988)	रैना व अन्य	उत्तरीय क्षेत्र राज्य सी. व डी. में तकनीशीयन शिक्षा प्रणाली का वैयक्तिक अध्ययन
(1989)	रमन्ना	आंध्राप्रदेश की जनजातीय समुदायों के बीच शिक्षा की समस्याओं पर आश्रम विद्यालयों का वैयक्तिक अध्ययन
(1989)	हेशर	शिक्षा के आर्थिक मूल्य-पुणे मेट्रोपोलिटन सिटी में विद्युत व विद्युतजन्य उद्योगों पर एक वैयक्तिक अध्ययन
(1989)	सच्चिदानंद	प्रारंभिक शिक्षा में विषमताएँ: बीघर का एक वैयक्तिक अध्ययन
(1991)	कुरूप् एवं थेट	शिक्षा का मूल्यीकरण : महाराष्ट्र पर एक वैयक्तिक अध्ययन
(1991)	गोविंदा व वरगिस	भारत में आधारभूत शिक्षा सेवाओं की गुणवत्ता: मध्यप्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों पर एक वैयक्तिक अध्ययन
(1991)	सलदन्हा व वलासकर	उच्च शिक्षा विस्तार की संस्था को लेकर प्रौढ़ शिक्षा पर वैयक्तिक अध्ययन
(1998)	कन्नड़ी	पूर्ण साक्षरता के लिए उत्तरदायी कारक इरन्नाकुलम जिले का एक वैयक्तिक अध्ययन
(2004)	पांडा	संस्थागत स्तर पर विद्यालय शिक्षा की लागत पर हरियाणा, गुड़गांव जिले में दो संभागों का वैयक्तिक अध्ययन

(2005)	सबनम	गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम (QIP) : जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (DPEP) आंध्राप्रदेश में वैयक्तिक अध्ययन
(2007)	संघई	बच्चों की भाषा सुधार कायक्रम का एक वैयक्तिक अध्ययन
(2008)	संघई	मध्यप्रदेश के आपरेशन गुणवत्ता कार्यक्रम पर वैयक्तिक अध्ययन
(2008)	कुमार	जम्मू सिटी प्राथमिक शिक्षा के सामाजिक मानकों का आंकलन पर वैयक्तिक अध्ययन

निष्कर्ष

सामाजिक शोध की दिशा में वैयक्तिक अध्ययन शोध कार्य एक विशिष्ट प्रक्रिया है। वैयक्तिक अध्ययन किसी व्यक्ति विशेष / संस्था विशेष के किसी एक पक्ष तक ही सीमित न रहकर भिन्न-भिन्न क्षेत्रों / दिशाओं में किए गए निष्पादन और उसके प्रभाव का समग्र अध्ययन है। किसी अद्‌वितीय इकाई की क्षमता और कमियों के अध्ययन करने का यह एक उत्तम उपागम है। समाज के कारकों, प्रक्रियाओं, समस्याओं और कार्यक्रमों के अध्ययन एवं उसकी जाँच के लिए वैयक्तिक अध्ययन पद्धति को शोध कार्य हेतु प्रयोग में लाया जाता है, जैसा कि उपर्युक्त तालिकाओं द्‌वारा स्पष्ट किया गया है।

समाज में नवाचारों के विकास एवं उन्नयन के लिए वैयक्तिक अध्ययन शोध पद्धति का प्रयोग औचित्यपूर्ण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 आहूजा, राम (2008), सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर, पृष्ठ 1-34.

2 मंगल अंश, बरौलिया, ए एवं अग्रवाल, नीतू, राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा, पृष्ठ 61-66.

3 गुप्ता एवं शर्मा (2005),. सामाजिक अन्वेषण की सर्वेक्षण पद्धतियाँ,. साहित्य भवन पब्लिकेशंस, आगरा, पृष्ठ 18.

4 Buch, M.B.(Ed.) Fourth Survey of Research in Education, National Council of Educational Research and Training. New Delhi.

5 Buch,M.B. (Ed.) Fifth Survey of Research in Education, National Council of Educational Research and Training. New Delhi.

6 Kannadi (1998). Factor Responsible for Total Literacy - A Case Study of Ernakulum District MSU, Baroda. Retrived from www. Educationinindia.net/ download/ Research_Abstract.pdf.

7 Kumar, N. (2008). Assessing the Social Parameters of Elementry Education : A case studyin Jammu City. Social Change. New Delhi, 38 (2) Pp. 204-205.

8 Minimum disclosure norms for college of Higher Education. Retrived from www.dauniv.ac.in/disclosure/KGRI-MinDisclosure_Norms.pdf.

9 National policy on Education. Modification(1992). Retrived from www.ncert.nic.in /oth-anoun/npe86.pdf.p 22.

10 Oyesola, G.O.(1988). The Contribution of Research to the Development of the National Education System. Retrived from www.unilosin.eduny/journals/ education/Ue/sept 1988/the contribution of research to the development of the nation.pdf.

11 Panda, H.K. (2004). Cost of School of Education at Institutional Level! A Case Study of two books bloc ks in the district

Gudgaon. Haryana, TMI. Retrived from http//old.jmi.ac.in/2000/research/ab2004 education hemant kpandy.htm.

12 Sangai (2007). Children Language Improvement Program(CLIP). A case Study. Indian Educational Abstract. NCERT, New Delhi 8 (1) Pp 23-24.

13 Sangai (2008). Operation Quality Program of Madhya Pradesh: A case study. Indian Educational Abstract. NCERT, New Delhi 8 (1) Pp 16-17.

14 Sharma (2009). Rajarshi Shahu jarvanyin Karyakram: A case study of district Kolhapur in Maharashtra. Indian Educational Abstract. NCERT, New Delhi 8 (1), Pp. 29-30.

15 Sinha, S.(2005). Quality Improvement Program (QIP); District Primary Education Program (DPEP). Andhra Pradesh : A Case Study. Indian Educational Abstract. NCERT, New Delhi 8 (1), p. 40.

16 Soni, R.B.L. (2007). Flexi School in Banglore City : A Case Study. Indian Educational Abstract. NCERT, New Delhi 8 (1), p. 56.

17 Tellis, W. (1997). Retrived from www. Nova.edu/ssss/QR/QR3-2/tellis. Html.